भूत पकड़ने वाला नाई

बंगाल की लोककथा

भूत पकड़ने वाला नाई

बंगाल की लोककथा

बंगाल के छोटे से गांव में एक युवा नाई रहता था. उसे अपना पेशा बहुत पसंद था. वो लोगों के बाल और दाढ़ी काटते समय उनसे तमाम रोचक कहानियां सुनता था. पर अगर कोई आदमी नाई को दुखभरी कहानी सुनाता तो नाई उसके पैसे वापिस कर देता और कहता, "तुम खुद ही यह पैसे रखो. तुम्हें इन पैसों की मुझ से ज़्यादा ज़रुरत है." उसके कारण नाई अक्सर खाली हाथ ही घर आता था.

नाई की पत्नी, को अपने पति की नेक दिली पसंद थी. पर अंत में वो अपने पति की आदत से तंग आ गई. एक दिन पत्नी ने नाई से कहा, "घर में अक्सर खाने तक को नहीं होता है. अपनी उदारता में तुम घर के लोगों की ज़रूरतों को बिल्कुल भूल जाते हो."

फिर पत्नी ने नाई को उस्तरा, कैंची, आईना और कंघा थमाते हुए कहा, "तब तक घर वापिस मत आना जब तक तुम हमारे खाने का इंतज़ाम न करो."

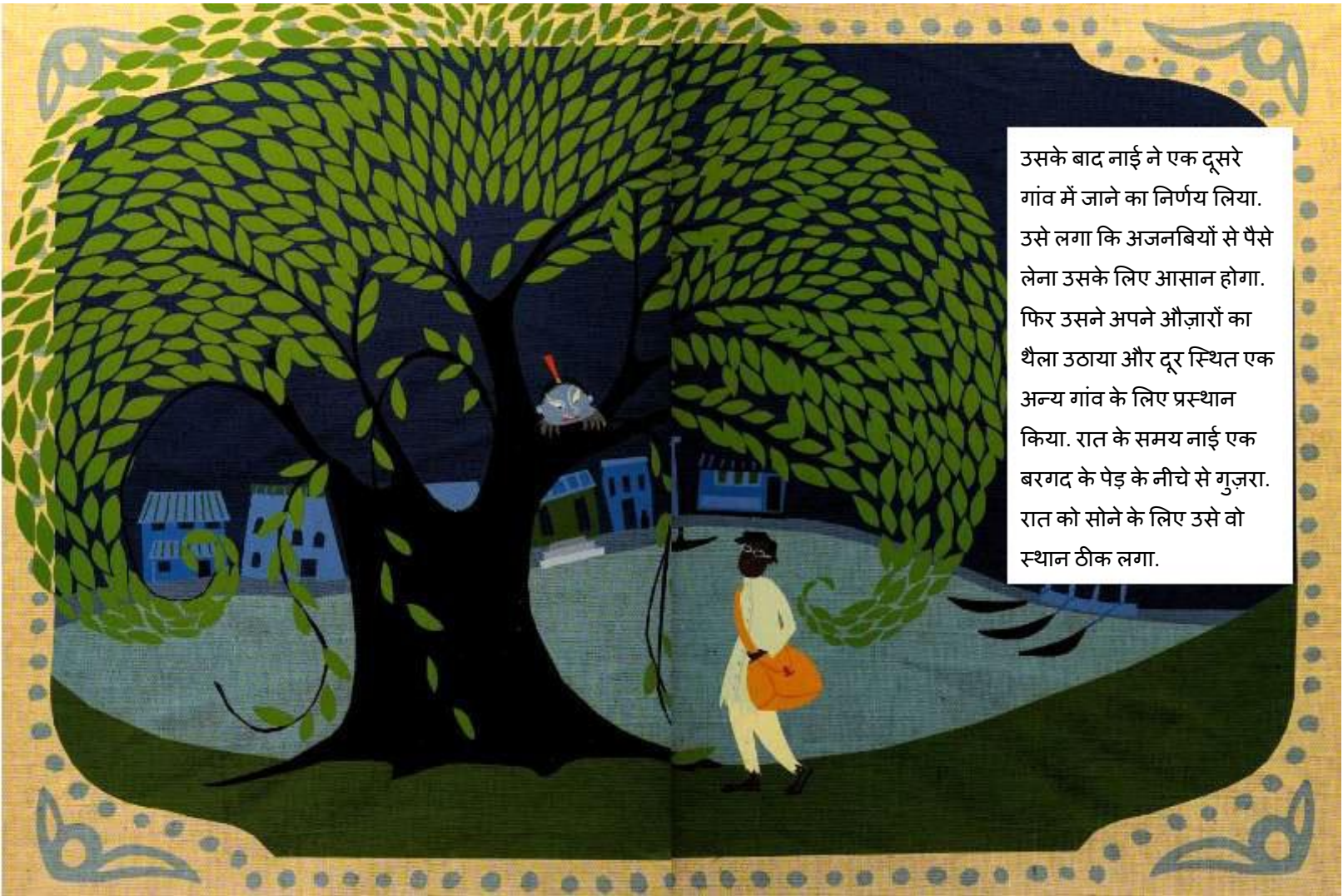

उसके बाद नाई ने एक दूसरे गांव में जाने का निर्णय लिया. उसे लगा कि अजनबियों से पैसे लेना उसके लिए आसान होगा. फिर उसने अपने औज़ारों का थैला उठाया और दूर स्थित एक अन्य गांव के लिए प्रस्थान किया. रात के समय नाई एक बरगद के पेड़ के नीचे से गुज़रा. रात को सोने के लिए उसे वो स्थान ठीक लगा.

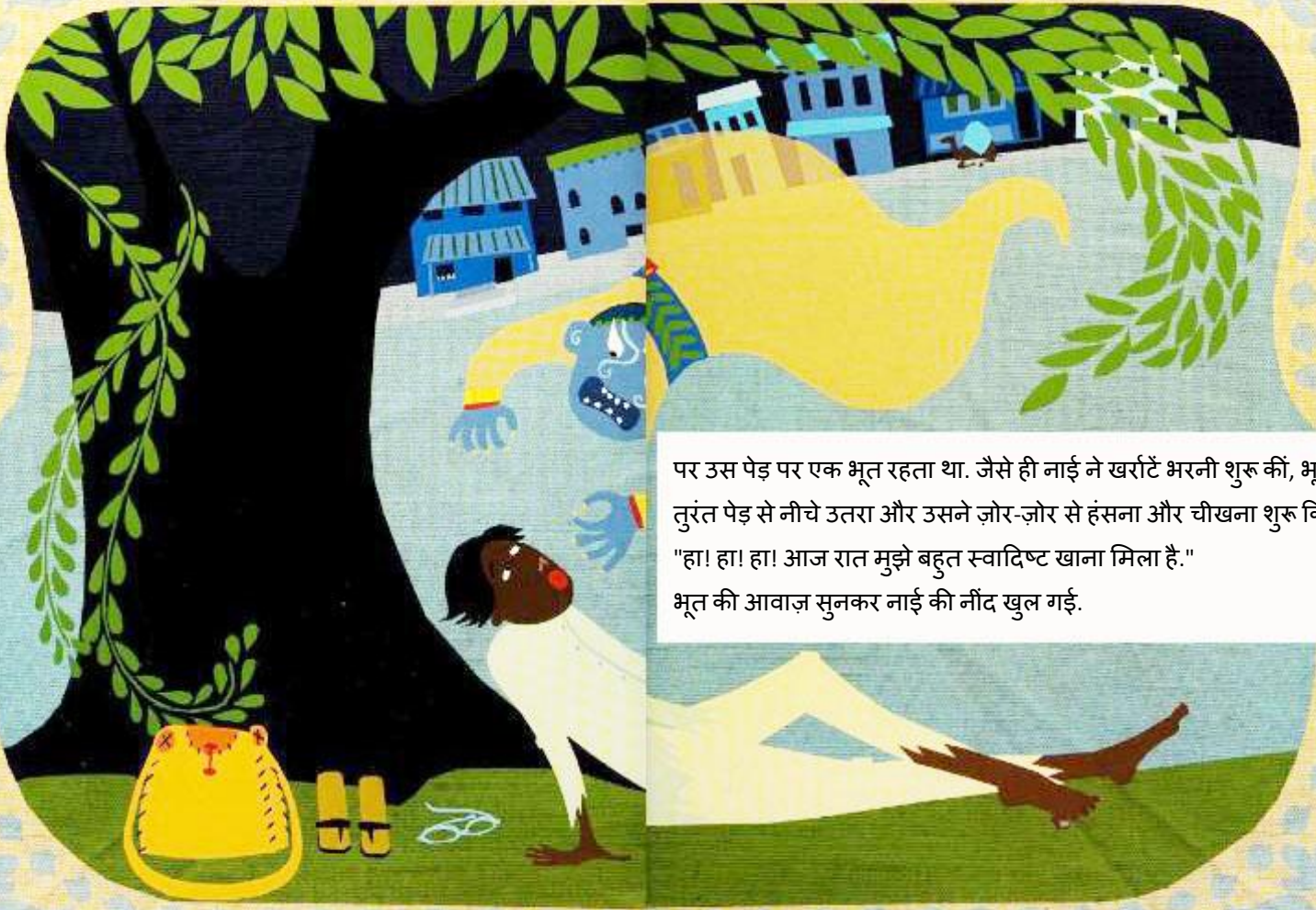

पर उस पेड़ पर एक भूत रहता था. जैसे ही नाई ने खर्राटें भरनी शुरू कीं, भूत तुरंत पेड़ से नीचे उतरा और उसने ज़ोर-ज़ोर से हंसना और चीखना शुरू किया, "हा! हा! हा! आज रात मुझे बहुत स्वादिष्ट खाना मिला है."
भूत की आवाज़ सुनकर नाई की नींद खुल गई.

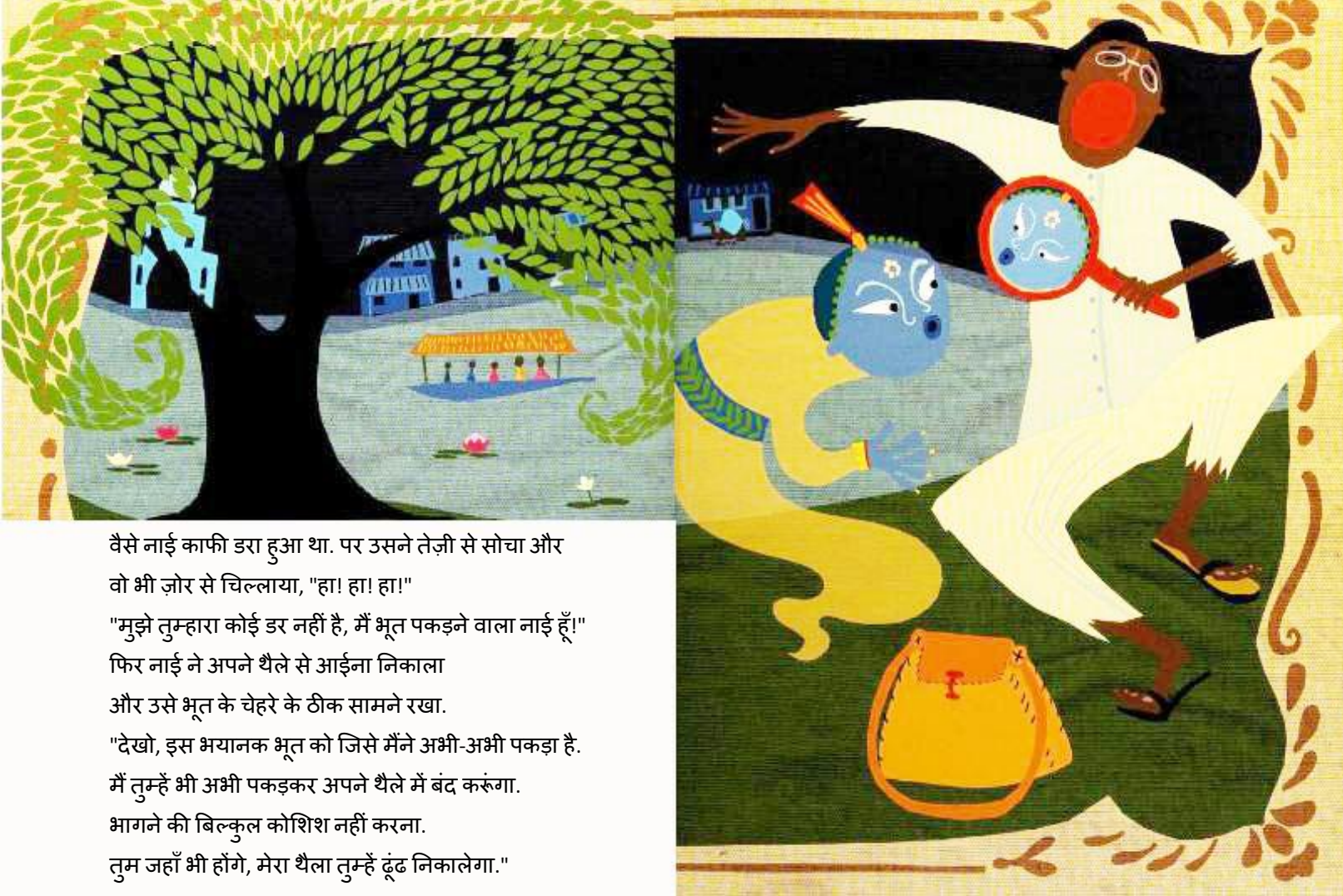

वैसे नाई काफी डरा हुआ था. पर उसने तेज़ी से सोचा और
वो भी ज़ोर से चिल्लाया, "हा! हा! हा!"
"मुझे तुम्हारा कोई डर नहीं है, मैं भूत पकड़ने वाला नाई हूँ!"
फिर नाई ने अपने थैले से आईना निकाला
और उसे भूत के चेहरे के ठीक सामने रखा.
"देखो, इस भयानक भूत को जिसे मैंने अभी-अभी पकड़ा है.
मैं तुम्हें भी अभी पकड़कर अपने थैले में बंद करूंगा.
भागने की बिल्कुल कोशिश नहीं करना.
तुम जहाँ भी होंगे, मेरा थैला तुम्हें ढूंढ निकालेगा."

भूत ने अपने ज़िंदगी में पहले कभी आईना नहीं देखा था. इसलिए वो अपना प्रतिबिम्ब पहचान नहीं सका. "हुज़ूर, आप जो कहेंगे मैं करूंगा, पर कृपा कर मुझे अपने थैले में उस भयानक भूत के साथ न डालें."

"ठीक है," नाई ने कहा, "आज रात मैं तुम्हारे पेड़ के नीचे ही सोऊंगा. सुबह तक तुम मेरे लिए एक हज़ार सोने की मोहरे लेकर आना नहीं तो मैं तुम्हें अपने थैले में बंद कर दूंगा."

भूत ने एक निगाह नाई के थैले पर डाली, और फिर वो वहां से छूमंतर हो गया.

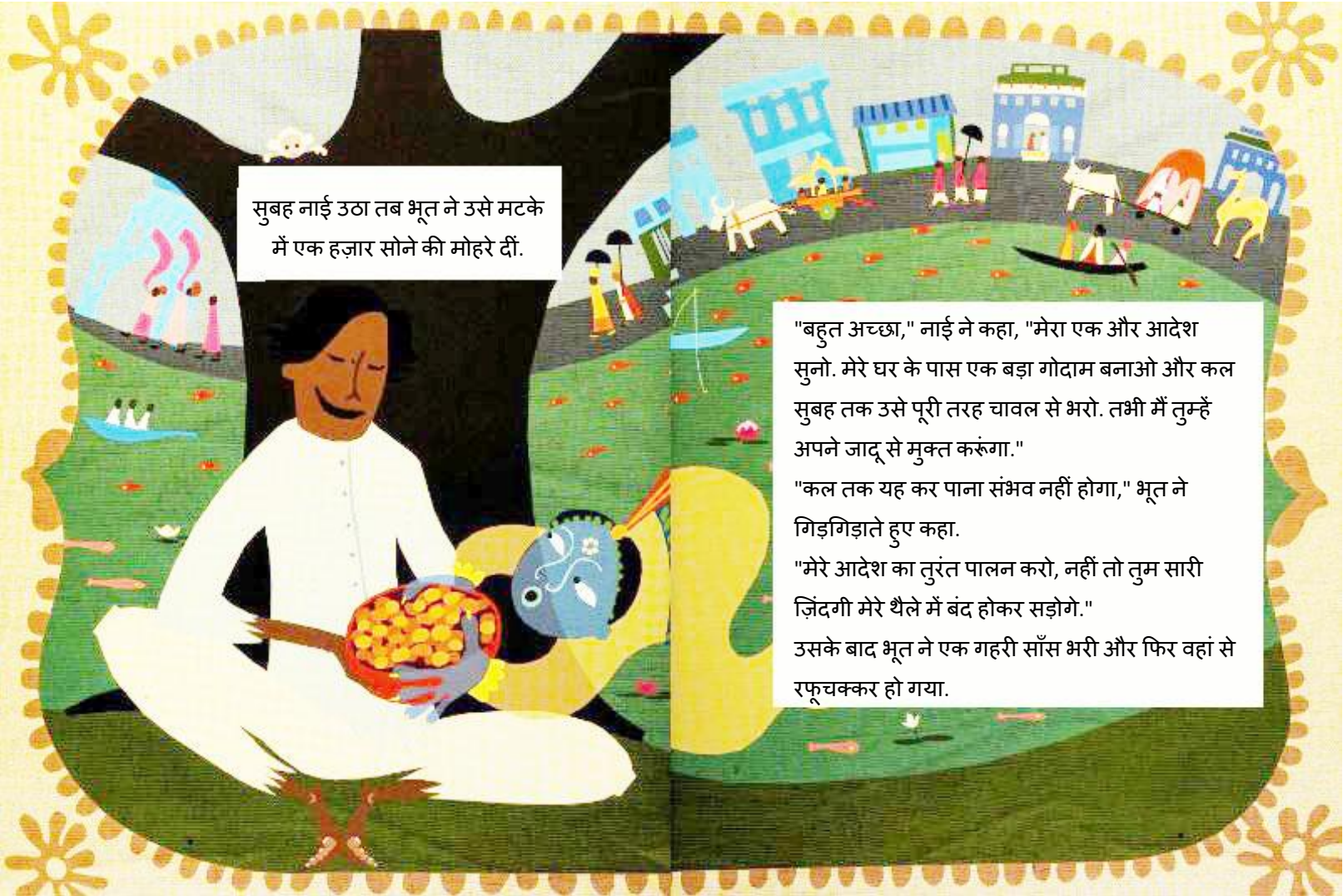
सुबह नाई उठा तब भूत ने उसे मटके में एक हज़ार सोने की मोहरे दीं.
"बहुत अच्छा," नाई ने कहा, "मेरा एक और आदेश सुनो. मेरे घर के पास एक बड़ा गोदाम बनाओ और कल सुबह तक उसे पूरी तरह चावल से भरो. तभी मैं तुम्हें अपने जादू से मुक्त करूंगा."
"कल तक यह कर पाना संभव नहीं होगा," भूत ने गिड़गिड़ाते हुए कहा.
"मेरे आदेश का तुरंत पालन करो, नहीं तो तुम सारी ज़िंदगी मेरे थैले में बंद होकर सड़ोगे."
उसके बाद भूत ने एक गहरी साँस भरी और फिर वहां से रफूचक्कर हो गया.

घर लौटने के बाद नाई ने अपनी पत्नी को सोने की मोहरों से भरा मटका दिखाया. नाई ने अपनी पत्नी को भूत की पूरी कहानी भी सुनाई.

"मैं तुम्हारी होशियारी से काफी खुश हूँ," नाई की पत्नी ने खुश होते हुए कहा. “चलो अब हमारी गरीबी के दिन ख़त्म हो जायेंगे.”

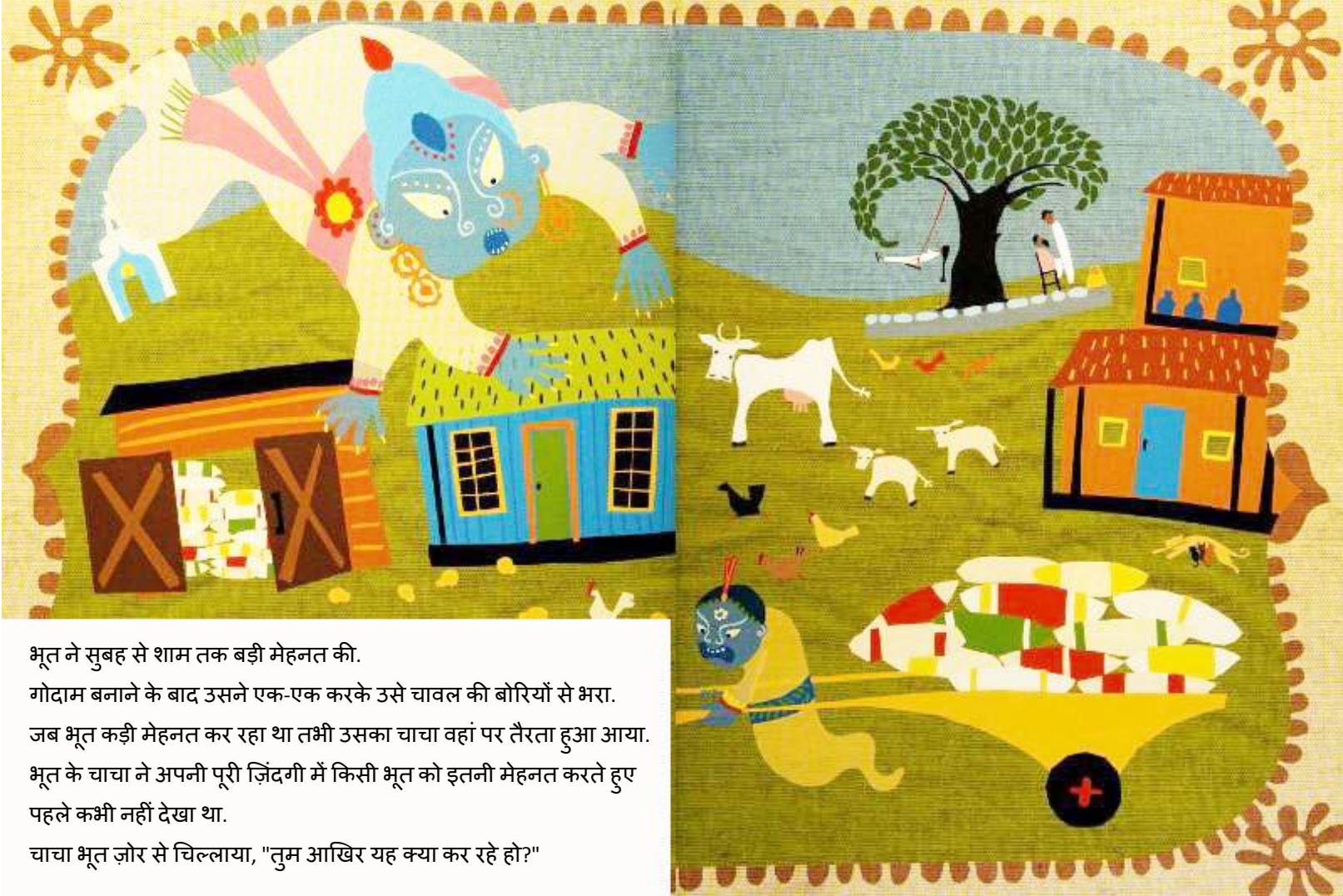

भूत ने सुबह से शाम तक बड़ी मेहनत की.

गोदाम बनाने के बाद उसने एक-एक करके उसे चावल की बोरियों से भरा.

जब भूत कड़ी मेहनत कर रहा था तभी उसका चाचा वहां पर तैरता हुआ आया.

भूत के चाचा ने अपनी पूरी ज़िंदगी में किसी भूत को इतनी मेहनत करते हुए पहले कभी नहीं देखा था.

चाचा भूत ज़ोर से चिल्लाया, "तुम आखिर यह क्या कर रहे हो?"

भूत ने धीमे से फुसफुसाते हुए कहा, "इस घर में एक बहुत शक्तिशाली आदमी रहता है. वो भूतों को पकड़ने में उस्ताद है. मुझे आज शाम तक उसका यह काम ख़त्म करना है नहीं तो वो मुझे अपने थैले में हमेशा के लिए कैद कर देगा और वहां पहले से ही एक भयानक भूत कैद है."

चाचा को अपने भतीजे की बात सुनकर बहुत गुस्सा आया. "अरे गधे, तुझे इतना तक पता नहीं कि मनुष्यों की कोई भी ताकत हम पर काम नहीं करती है. तू अभी मेरे साथ चल. हम उस आदमी को अच्छा सबक सिखाएंगे. फिर वो भूतों की सही इज़्ज़त करना सीखेगा."

उसके बाद दोनों भूतों ने नाई के घर की खिड़की में से झांककर देखा.

फिर भूत के चाचा ने बहुत ज़ोर से, "हा! हा! हा!" कहा.
"आज मैं इस आदमी को खाऊंगा!
चलो भतीजे, हम अभी उसे मिलकर खाते हैं!
पर उससे बेहतर होगा, कि हम उसे पकाएं."

पर चाचा भूत को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब उसे नाई के चेहरे पर कोई चिंता और डर दिखाई नहीं दिया.

फिर नाई ने भतीजे भूत से कहा, "क्योंकि तुमने मेरा आदेश माना है और पूरा काम किया है, इसलिए तुम अब मुक्त हो."
फिर नाई ने चाचा भूत को घूरते हुए कहा, "अब तुम्हारी जगह मैं इस भूत को अपने थैले में बंद करूंगा."

यह सुनकर चाचा भूत को बहुत गुस्सा आया.
"तुम्हारी एक भूत से इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे हुई?" वो चिल्लाया.
पर तभी नाई ने अपना सबसे बड़ा आईना चाचा भूत के चेहरे के सामने रखा.
"इस भूत के साथ ज़िंदगी बिताना तुम्हें कैसा लगेगा?" नाई चिल्लाया.

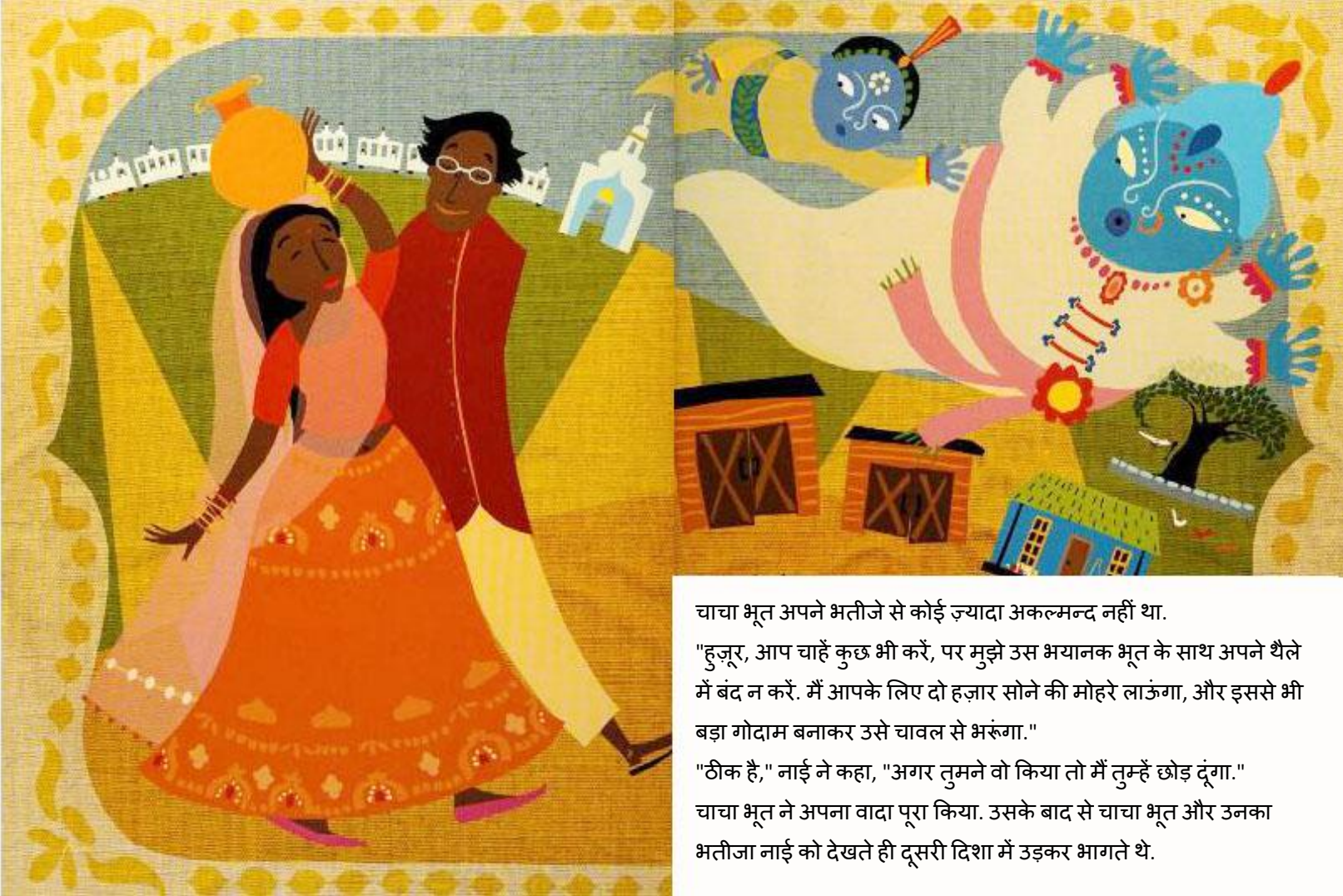

चाचा भूत अपने भतीजे से कोई ज़्यादा अकल्मन्द नहीं था.

"हुज़ूर, आप चाहें कुछ भी करें, पर मुझे उस भयानक भूत के साथ अपने थैले में बंद न करें. मैं आपके लिए दो हज़ार सोने की मोहरे लाऊंगा, और इससे भी बड़ा गोदाम बनाकर उसे चावल से भरूंगा."

"ठीक है," नाई ने कहा, "अगर तुमने वो किया तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा."

चाचा भूत ने अपना वादा पूरा किया. उसके बाद से चाचा भूत और उनका भतीजा नाई को देखते ही दूसरी दिशा में उड़कर भागते थे.

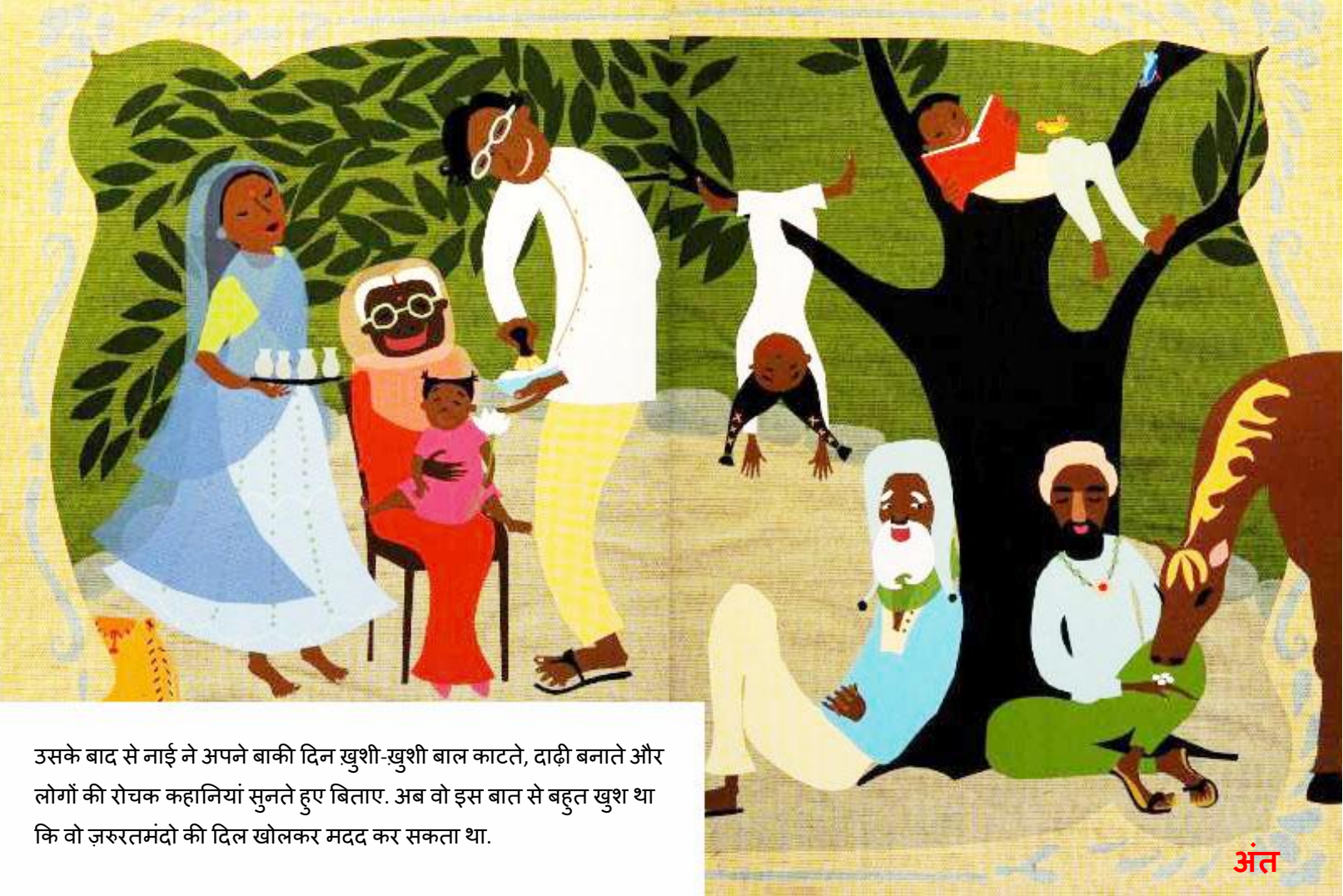

उसके बाद से नाई ने अपने बाकी दिन ख़ुशी-ख़ुशी बाल काटते, दाढ़ी बनाते और लोगों की रोचक कहानियां सुनते हुए बिताए. अब वो इस बात से बहुत खुश था कि वो ज़रुरतमंदो की दिल खोलकर मदद कर सकता था.

अंत